श्वेताश्वेतर उपनिषद् में ईश्वर का स्वरूप

Nature of God in Swetaswetar Upnishad

Dr. Ram Kishore
Assistant Professor (Yoga)
School of Health Sciences
CSJM University, Kanpur

ईश्वर का स्वरूप

Nature of God

स्वभावमेके कवयो वदन्ति कालं तथान्ये परिमुह्यमानाः।

देवस्यैष महिमा नु लोके येनेदं भ्राम्यते ब्रह्मचक्रम।।

श्वेताश्वेतर उननिषद् 6.1।

कुछ विद्वान मनुष्य के स्वभाव को जन्म का चक्र कारण बताते हैं, दूसरे कुछ लोग काल को इसका कारण बताते हैं, परंतु यह लोग यथार्थता से बहुत दूर और मोहग्रस्त की स्थिति में हैं। वास्तव में यह परमात्म देव की ही महिमा ही है, जिसके द्वारा इस लोक में यह ब्रह्मरूप सृष्टि का चक्र घुमाया जाता है

ईश्वर का स्वरूप

Nature of God

येनावृतं नित्यमिदं हि सर्वं ज्ञः कालकालो गुणी सर्वविद्यः।
तेनेशितं कर्म विवर्तते ह पृथ्व्याप्तेजोऽनिलखानि चिन्त्यम्।।

श्वेताश्वेतर उननिषद 6.2।

जिसके द्वारा यह समस्त जगत सदैव व्याप्त रहता है, जो ज्ञान स्वरूप, काल का भी काल, सर्वगुण संपन्न और सर्वज्ञ है। उसके ही अनुशासन में यह संपूर्ण कर्म चक्र घूम रहा है। पृथ्वी, जल, तेज, वाय, तथा आकाश इन पांच तत्वों का चक्र भी उसी के हाथ में है, एसा चिंतन करना चाहिए।

ईश्वर का स्वरूप

Nature of God

तत्कर्म कृत्वा विनिवर्त्य भूयस्तत्त्वस्य तत्त्वेन समेत्य योगम्।
एकेन द्वाभ्यां त्रिभिरष्टभिर्वा कालेन चैवात्मगुणैश्च सूक्ष्मैः।।

श्वेताश्वेतर उननिषद् 6.3।

उस परमात्मा ने कर्म चक्र चलाकर उसका अवलोकन कर आगे चेतन तत्व से जड तत्व का संयोग करा कर जगत की रचना की, अथवा एक (अविद्या), 2 (धर्म और अधर्म), तीन (सत्, रज और तम), आठ (मन, बुद्धि, अहंकार सहित पंच तत्वों) या प्राकृतिक भेदों से तथा काल एवं सूक्ष्म आन्तरिक गुणों (ममता, अहंता, इच्छा, अशक्ति आदि) के संयोग से इस जगत की रचना की

धन्यवाद

Thanks